

डॉ. फ्रेड पुटनम, नीतिवचन, व्याख्यान 4

© 2024 फ्रेड पुटनम और टेड हिल्लेब्रांट

नीतिवचन की पुस्तक पर डॉ. फ्रेड पुटनम का यह चौथा और अंतिम व्याख्यान है।

पिछली बार हमारे तीसरे व्याख्यान में, मैंने उन कहानियों का उल्लेख किया था जिन्हें नीतिवचन संपीड़ित करते हैं। बाइबिल की किताब में और आम तौर पर नीतिवचन में नीतिवचन ऐसा करने का एक तरीका चित्रों या छवियों का उपयोग करना है।

छवियाँ स्थान बचाने का एक शानदार तरीका हैं, यही एक कारण है कि वे कहावतों में इतने लोकप्रिय हैं, क्योंकि एक तस्वीर आखिरकार हजारों शब्दों के बराबर होती है, जो अपने आप में एक कहावत है। लेकिन एक छवि की व्याख्या करने से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि लेखक क्या प्राप्त कर रहा है और वास्तव में हमें दुनिया को समझने में मदद करता है, दुनिया के बारे में उसका दृष्टिकोण और वह जीवन के कुछ पहलू या यहां तक कि जीवन को कैसे समझ रहा है। उदाहरण के लिए, यदि हम अध्याय 19 को देखें, तो श्लोक एक कहता है, वह गरीब आदमी जो अपनी खराई या सीधाई से चलता है, उस व्यक्ति से बेहतर है जो टेढ़े होठों वाला और मूर्ख है।

इसलिए, जैसा कि हमने पिछली बार देखा था, दोनों के बीच एक विरोधाभास है। और यह एक खास तरह की कहावत है जिसे कुछ लोगों ने कहावतों से भी बेहतर बताया है। कहावतें, आप उन्हें भजनों की पुस्तक में एक जोड़े में, नीतिवचन में एक पूरा समूह, सभोपदेशक में कुछ में पाते हैं, और वास्तव में यीशु सुसमाचार में अपने शिक्षण में इस रूप का उचित मात्रा में उपयोग करते हैं।

'बेहतर से बेहतर' कहावत में दो चीजों की तुलना की जाती है जिससे एक चीज को दूसरी से बेहतर बताया जाता है और ऐसा लगता है कि वह हमारे लिए पिछड़ी हुई है। तो, यह वास्तव में क्या कहता है कि गरीब होना बेहतर है। और हम सोचते हैं, ठीक है, गरीबी अमीरी से बेहतर है।

या अगर हम कुछ अध्यायों को पीछे ले जाएं, तो पाले हुए बैल और उसके साथ नफरत की तुलना में प्रेम के साथ जड़ी-बूटियों का भोजन बेहतर है। अच्छा, तो सब्जियाँ मांस से बेहतर हैं। क्या यह कहा जा रहा है, क्या सुलैमान शाकाहारी भोजन की वकालत कर रहा है? नहीं, बिल्कुल नहीं।

लेकिन पिछली कविता में, यह 1516 में है, बड़े खजाने और उसके साथ उथल-पुथल की तुलना में प्रभु का थोड़ा सा भय रखना बेहतर है। और कहते हैं, तो गरीब रहना ही अच्छा है। क्या सुलैमान वास्तव में गरीबी की वकालत कर रहा है? खैर, याद रखें कि अध्याय एक से नौ तक ज्ञान प्राप्त करने का एक लाभ यह है कि आप अमीर बन जाते हैं, आप एक नेता बन जाते हैं, कि आप शक्तिशाली बन जाते हैं।

वह बिल्कुल भी धन के खिलाफ़ नहीं है, जैसा कि हम किंग्स की पुस्तक में उसके जीवन से बता सकते हैं। नहीं, मुद्दा यह नहीं है कि गरीबी अमीरी से बेहतर है। लेकिन कहावतों से बेहतर में हमेशा यह बात होती है कि जो चीज बेहतर है वह यह है कि दोनों चीजें योग्य हैं।

तो, इस मामले में, गरीब होना बेहतर है, लेकिन मूर्ख होने की तुलना में ईमानदार होना बेहतर है। और इस मामले में, यह फिर से, उस उदाहरण की तरह है जिसे हमने बहुत संक्षेप में देखा, असममित समानता क्योंकि दोनों चीजें वास्तव में नहीं चलती हैं, वे वास्तव में एक दूसरे के विपरीत नहीं हैं। इसलिए यह कहने के बजाय कि ईमानदारी से चलने वाला गरीब आदमी, टेढ़ी बोली वाले अमीर आदमी या मूर्ख बोलने वाले अमीर आदमी से बेहतर है, यह अमीर आदमी की वाणी में टेढ़ी बात या मूर्ख को प्रतिस्थापित कर देता है और हमसे यह जानने की अपेक्षा करता है कि वह मूर्ख है। एक अमीर आदमी के बारे में बात करना जो विकृत या कुटिल दोनों है और एक मूर्ख बनाम एक गरीब आदमी के बारे में है जो ईमानदार है।

तो, इस मामले में, मुद्दा वास्तव में गरीबी या अमीरी का नहीं है। मुद्दा वास्तव में ईमानदारी बनाम धोखाधड़ी या कुटिलता का है। और फिर, याद रखें, जब हम किसी कहावत के बारे में सोचने की कोशिश करते हैं, तो हम सोचते हैं, ठीक है, वास्तव में मुद्दा क्या है? वह हमें यह जानकारी क्यों बता रहा है? अच्छा, इस बारे में सोचो।

यदि आप प्राचीन इज़राइल में एक नेता थे, तो धन और शक्ति उन लोगों को मिलती है जिनके पास धन और शक्ति होती है। तो, किसी बिंदु पर, इसकी पूरी संभावना है कि आपके सामने एक विकल्प आएगा। क्या आप अमीर बनना चुनते हैं, भले ही ऐसा करने के लिए आपको झुकना पड़े, कानून तोड़ना पड़े या कानून का उल्लंघन करना पड़े? या क्या आप उस परिस्थिति में रहना चुनते हैं जिसमें आप खुद को पाते हैं, भले ही इसका मतलब है कि आप शायद वहां रहने वाले हैं, आप गरीबी में फंसने वाले हैं, कम से कम जहां तक आप देख सकते हैं।

और सुलैमान उन युवाओं से कह रहा है जो उसकी किताब पढ़ने जा रहे हैं कि, नहीं, आपके लिए हर बार ईमानदारी चुनना बेहतर होगा। और ऐसा इसलिए है क्योंकि कई अन्य छंद हैं जो अखंडता के बारे में बात करते हैं और इसके मूल्य और इसके लाभ के बारे में बात करते हैं। और वास्तव में, कुछ लोग कहते हैं कि यदि आपमें ईमानदारी है तो आप सुरक्षित हैं।

लेकिन इस श्लोक में वह बहुत दिलचस्प बात कहते हैं। वह ऐसे ही नहीं कहते, वह गरीब आदमी ही अच्छा है जिसमें ईमानदारी हो। वह कहता है, जो अपनी खराई से चलता है।

और इस किताब में वह छवि है। अब, वास्तव में, दूसरी पंक्ति में एक और छवि है, जो कहती है, जिसके होंठ टेढ़े हैं। तो, क्या इसका मतलब यह है कि उसका मुँह झुका हुआ है? ठीक है, नहीं, क्योंकि होंठ का मतलब उन शब्दों से है जो उसके मुँह से निकलते हैं।

और इसलिए, हम उस बारे में लंबे समय तक बात कर सकते हैं। लेकिन मैं पहली पंक्ति, पहली पंक्ति की छवि को देखना चाहूंगा क्योंकि नीतिवचन की पूरी किताब के लिए यह एक मौलिक छवि है। और यह कहता है, वह कंगाल मनुष्य जो अपनी खराई से चलता है।

जब हम एक छवि पढ़ते हैं, तो ठीक है, हम जानते हैं कि हम एक छवि पढ़ रहे हैं, फिर से, जैसे कि हम जानते हैं कि यह एक कहावत है क्योंकि हम सिर्फ यह जानते हैं कि यह है। हम इसे तब जानते हैं जब हम इसे देखते हैं। लेकिन हम यह भी कह सकते हैं, क्या वास्तव में खराई पर चलना संभव है? यानी, क्या अखंडता एक चीज़ है, मिट्टी जैसी एक भौतिक चीज़ जिसमें आप चल सकते हैं या रेत या गंदगी या कुछ और? उत्तर, निश्चित रूप से, नहीं है, आप पेंसिल्वेनिया की तरह ईमानदारी से नहीं चल सकते।

लेकिन क्या होगा यदि चलना ही जीवन है? और क्या होगा यदि अखंडता का उपयोग इस प्रकार किया जा रहा है कि चलना एक रूपक है, और अखंडता एक अन्य रूपक है। और इस मामले में, हमारे पास इन दो रूपकों के नीचे ये दो वास्तव में बहुत अच्छे विचार हैं। पहला यह कि सत्यनिष्ठा भौतिक वस्तु है।

मैं जानता हूँ कि यह थोड़ा कमजोर है, लेकिन मुझे नहीं पता कि कौन सा बेहतर शब्द इस्तेमाल करूँ। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह कुछ ऐसा है जिसमें आप चल सकते हैं। अब, यह बहुत अजीब लगता है।

लेकिन वास्तव में यह सुझाव देता है कि हमारे पास यह विकल्प है कि हम कहाँ चलें। क्योंकि आप कीचड़ में चलना चुन सकते हैं, या आप सड़क पर चल सकते हैं, या आप पथरों पर चल सकते हैं, या आप बजरी में चल सकते हैं। और इस मामले में, अखंडता एक ज़मीनी सतह है, या शायद एक सड़क भी।

तो, यह एक रास्ता है जिसे आप चुनते हैं। और इसलिए उनका वॉक का उपयोग वास्तव में वह चीज़ है जो अखंडता को एक रूपक में बदल देता है। अगर उन्होंने कहा, इससे बेहतर एक गरीब आदमी है जो ईमानदारी का जीवन जीता है, तो देखिए रूपक चला गया है।

मुझे लगता है कि हम अभी भी कह सकते हैं, कि यदि हम वास्तव में इसका विस्तार करना चाहते हैं, तो जब आप रूपकों के बारे में बात कर रहे हों तो आप हमेशा गहराई में जा सकते हैं। तो, हम कह सकते हैं, ठीक है, वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसके जीवन की विशेषता उन विकल्पों से होती है जिन्हें हम ईमानदारी के रूप में चिह्नित करेंगे, और हम इसका समर्थन करना शुरू कर सकते हैं और इसे आगे और पीछे धकेल सकते हैं। लेकिन वास्तव में क्या चल रहा है, हालाँकि, आप देखते हैं, वह एक मूलभूत या वैचारिक रूपक का उपयोग कर रहा है जो इसे रेखांकित करता है, जो नीतिवचन की पूरी किताब में पाया जाता है, जो यह है कि जीवन एक यात्रा है।

याद रखें कि हमने बात की थी, या मैंने पहले व्याख्यान में उल्लेख किया था जिसमें कहा गया था कि नीतिवचन कहते हैं, यहां सड़क है, और यह सही सड़क है, और चाहे आप दाईं ओर मुड़ें या बाईं ओर, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, आप बंद हैं रास्ता। यह वास्तव में ऐसी सड़क का विकल्प नहीं है जो बुद्धिमान हो और ऐसी सड़क हो जो मूर्खतापूर्ण हो और जिसके बीच में कुछ भी न हो, हालाँकि इसमें कुछ वैधता है क्योंकि कुछ कहावतें हैं जो इस तरह से बात करती हैं। लेकिन समग्र तस्वीर एक सड़क की है, और यदि आप सड़क से हट गए हैं, तो आप खो गए हैं।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप सड़क से कैसे उतरे या आप कहां हैं, कहां जा रहे हैं। खैर, एक यात्रा के रूप में जीवन की यह तस्वीर, मूलभूत रूपकों का कारण यह है कि वे हमें वास्तविकता के कुछ पहलू के बारे में हमारी सोच को समझने और व्यवस्थित करने का एक तरीका देते हैं जिसे हमारे पास सीधे अनुभव करने का कोई तरीका नहीं है। अब आप कहते हैं, एक सेकंड रुकें, मैं जीवित हूँ, मैं अपने जीवन का अनुभव कर रहा हूँ।

हाँ, आप अपने जीवन का अनुभव कर रहे हैं। सचमुच में ठीक नहीं। आप वास्तव में जो अनुभव कर रहे हैं, जो मैं वास्तव में अनुभव कर रहा हूँ वह इस क्षण, यह छोटा सा टुकड़ा है।

मैं पुराने क्षणों, पुराने टुकड़ों, उनमें से कुछ को याद कर सकता हूँ, और जैसे-जैसे मैं बड़ा होता जाता हूँ, उतने नहीं, मैं कुछ क्षणों या टुकड़ों का अनुमान लगा सकता हूँ जो आने वाले होंगे, लेकिन मैं वास्तव में अपने पूरे जीवन की कल्पना या समझ नहीं सकता, यहां तक कि यदि मैं बहुत तेज गति से देख सकूँ, तो जाहिर है, मेरे जन्म से लेकर इस क्षण तक मेरे पूरे जीवन का एक वीडियो टेप। और मेरा मस्तिष्क, मान लीजिए कि मेरा मस्तिष्क वह सारी जानकारी उस दर से ग्रहण कर सकता है जिस गति से इसे बजाना होगा ताकि मुझे अपने जीवन के दूसरे आधे समय तक यहां न बैठना पड़े। उस समय मेरे जीवन का आधा हिस्सा क्या होगा? यह रे ब्रैडबरी की लघु कहानी जैसी लगने लगी है।

क्षमा करें, मैं उससे पीछे हट जाऊंगा। लेकिन अगर मैं ऐसा कर भी लूँ, तब भी मैं जो कुछ हुआ था, उसे समझ नहीं पा रहा था जैसे कि यह मेरे साथ हो रहा हो। और इसलिए जीवन के बारे में केवल एक अमूर्त चीज़ के रूप में बात करने की कोशिश करने के बजाय, मनुष्य ने एक रूपक विकसित किया है जो कहता है कि जीवन एक यात्रा है।

और यह संभव है क्योंकि जब हम पैदा होते हैं तो जीवन शुरू होता है, एक स्थान पर यात्रा शुरू होती है। जब हम मरते हैं तो जीवन समाप्त हो जाता है। और एक समय ऐसा आता है जब हर यात्रा समाप्त हो जाती है।

मैं एक यात्रा के रूप में जीवन के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ। ठीक है, मैं स्टोर तक या दादा-दादी से मिलने या छुट्टियों पर जाने या ऐसी ही किसी विशेष यात्रा के बारे में बात कर रहा हूँ। और साथ ही, हमारे जीवन में हमारे साथ जो कुछ भी घटित होता है, ठीक है, शायद सभी नहीं, लेकिन उनमें से अधिकांश उन चीज़ों के अनुरूप होते हैं जो यात्रा के दौरान घटित होती हैं, हम दुर्घटनाओं का शिकार हो जाते हैं, आपके साथ कोई दुर्घटना हो सकती है या आपकी कार खराब हो सकती है।

और इसी तरह, हम अपने जीवन में समस्याओं का सामना कर सकते हैं। ताकि हम लोगों के बारे में ऐसी बातें भी कहें जैसे कि उनके जीवन में वास्तविक बदलाव आया हो, है ना? या उसकी नौकरी में तेजी से उछाल आया, या वे इस समय पथरीले दौर से गुजर रहे हैं। या फिर मेरे जीवन में चीज़ें कुछ उतार-चढ़ाव भरी हैं।

और हमें यह एहसास भी नहीं है कि ये शायद एक बेहतर शब्द, इस मूल रूपक से निकले हैं या विकसित हुए हैं, ये इस मूल रूपक से निकले हैं कि जीवन एक यात्रा है। और इसलिए, हम इन सभी छोटे रूपकों का उपयोग कर सकते हैं, बिना यह जाने कि बड़ा रूपक जमीन के नीचे है। किसी पेड़ को देखने की तरह ही, उसकी जड़ की संरचना के बारे में कल्पना करना भी बहुत कठिन है।

लेकिन यह जड़ की संरचना ही है जो पेड़ को संभव बनाती है। न जड़ें, न वृक्ष, न जड़ रूपक, न बुनियाद। कोई जड़ रूपक नहीं, नहीं, कोई छोटा रूपक नहीं, कोई मूलभूत रूपक नहीं, आप इस पर कुछ भी नहीं बना सकते, इमारत बनाने के लिए आपके पास नींव होनी चाहिए।

और जब हम उस तरह से सोचना शुरू करते हैं, तो हमें एहसास होता है कि सभी कहावतें जो मनुष्य के कदमों को भगवान द्वारा निर्धारित किए जाने की बात करती हैं, मनुष्य से उसके रास्ते की योजना बनाने की मांग, एक यात्रा, एक रास्ता, पथ, राजमार्ग, यह बहुत बुरा है अनुवाद, अंतरराज्यीय के बारे में मत सोचो, ठीक है, या ऐसा कुछ भी। हम बिल्कुल भी निश्चित नहीं हैं कि यह सड़क किस प्रकार की थी। परन्तु दुष्टों का मार्ग किसी प्रकार कांटों का मार्ग है, कांटों का मार्ग है, कांटों का मार्ग है।

कांटों का झुरमुट। खैर, वे सभी रूपक, और भी बहुत कुछ, इस विचार के इर्द-गिर्द बनाए गए हैं कि जीवन एक यात्रा है। वे मूलभूत रूपक पर निर्मित हैं।

और यदि हम एक व्यक्तिगत कहावत पढ़ना शुरू करते हैं, और अखंडता में चलता है जैसे रूपक पर आते हैं, तो हम कहते हैं, आधार क्या है? उसके नीचे क्या पड़ा है? जड़ क्या है? अब मैं उन सभी रूपकों को देख सकता हूँ जो एक यात्रा के रूप में जीवन के बारे में बात करते हैं, यह देखते हुए कि वे वास्तव में एक ही चीज़ के बारे में बात कर रहे हैं। अंग्रेजी शब्द चाहे जो भी हो, चाहे वह रन, वॉक, फॉल्स, ट्रिप्स, स्टंबल्स, पाथ, रोड या कुछ भी हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वे सभी हैं, वे सभी इस सामान्य समझ से विकसित होते हैं, जो रूपकों को बदलने के लिए दूसरे का उपयोग करता है, हमें उन्हें समझने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है।

खैर, मुझे दूसरे का उपयोग करने दीजिए, मैं आपको एक चित्र का एक और उदाहरण दिखाता हूँ। और, ठीक है, केवल 1901 का समर्थन करने के लिए, हम उसके बारे में सोच सकते हैं, फिर से, हम एक कहानी ले सकते हैं, हम इसके बारे में एक कहानी बना सकते हैं, हम बना सकते हैं, शायद आप किसी ऐसे व्यक्ति को भी जानते हों जिसके साथ ऐसा हुआ हो। जिन लोगों ने अपनी नौकरी खो दी है क्योंकि उन्होंने झूठ बोलने से इनकार कर दिया था, मैं किसी ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जिसके साथ ऐसा हुआ है, और फिर भी आज कहेंगे कि वे इसके लिए अधिक खुश और बेहतर हैं।

वे अधिक अमीर नहीं हैं, वे वास्तव में कम पैसा कमा रहे हैं, और चीजें थोड़ी कठिन हैं, लेकिन वे कहेंगे कि वे इसके लिए अधिक खुश हैं। वे तुरंत इससे सहमत होंगे, और मैं उनकी कहानी के बारे में बहुत विस्तार में जा सकता हूँ, जो मैं नहीं करूँगा। और इसी तरह, कोई व्यक्ति जो दुष्टता

से धनवान बनता है, चाहे वह धोखाधड़ी हो या किसी अन्य रूप में, मैं उस स्थिति में भी लोगों के उदाहरणों के बारे में सोच सकता हूँ।

खैर, मुझे नहीं पता कि क्या वे कहेंगे कि वे ऐसा दोबारा नहीं करेंगे, लेकिन वे निश्चित रूप से दूसरों की तरह खुश नहीं हैं। तो, हम तस्वीर ले सकते हैं, और हम तस्वीर को एक कहानी में बदल सकते हैं, और हम खुद से पूछ सकते हैं कि यह कहावत हमें क्या करने के लिए प्रोत्साहित कर रही है? यह हमें जीवन के बारे में सोचने, हमारे सामने आने वाले विकल्पों के बारे में सोचने के लिए कैसे प्रोत्साहित कर रहा है, और यह हमें किस ओर प्रोत्साहित कर रहा है? यदि आप अध्याय 20 का एक पृष्ठ पलटें, तो अध्याय 20 में दो बहुत दिलचस्प कहावतें हैं। वास्तव में, हर कहावत दिलचस्प है।

एक बार जब मैंने वास्तव में इसका अध्ययन करना शुरू कर दिया तो मुझे ऐसा कभी नहीं मिला जो आकर्षक न हो। लेकिन इस अध्याय में दो बातें मुझे दिलचस्प लगती हैं, खासकर जब मैं इस व्याख्यान के लिए तैयार हो रहा था। श्लोक 8 कहता है, कि जो राजा न्याय के सिंहासन पर बैठता है, वह वास्तव में अपनी आंखों से सारी बुराई को परख लेता है।

और फिर अगला पृष्ठ श्लोक 26 है, एक बुद्धिमान राजा दुष्टों को परास्त करता है और उनके ऊपर चक्र घुमाता है। खैर, वहाँ बहुत कुछ है। उन दोनों में कुछ चीजें समान हैं।

आपने देखा कि वे दोनों राजाओं के बारे में बात करते हैं, वे दोनों दुष्टों या शायद दोषियों के बारे में बात करते हैं, मुझे लगता है कि इस मामले में शायद यह एक बेहतर अनुवाद है, और वे दोनों जीतने के बारे में बात करते हैं। आयत 8 कहती है कि वह सभी दोषियों को अपनी आंखों से परास्त कर देता है। श्लोक 26 बस इतना कहता है कि वह दोषियों को जीतता है और उन पर पहिया घुमाता है।

क्या चित्रित किया जा रहा है? खैर, सोलोमन एक बहुत अच्छे मूलभूत छवि रूपक का उपयोग करता है जो कहता है कि निर्णय जीतना है। अब, जैसे हम जीवन को एक यात्रा के रूप में देख सकते हैं और पूछ सकते हैं, ऐसा कैसे है कि जीवन एक यात्रा है? हम फैसले को जीत के रूप में देख सकते हैं और कह सकते हैं, अच्छा, ऐसा कैसे है कि फैसला जीत रहा है? उस बारे में सोचना। खैर, सबसे पहले, विनोइंग क्या है? यह पहला प्रश्न है।

इसीलिए हमें यह पसंद है कि बाइबिल शब्दकोश या यहां तक कि एक नियमित शब्दकोश भी आपको यह जानकारी देगा। विनोइंग एक ऐसी प्रक्रिया है जहां प्राचीन निकट पूर्व में, वे काटने के बाद सारा अनाज इकट्ठा कर लेते थे और वे इसे डंडों से पीटते थे, जिसे थ्रेशिंग कहा जाता है, जिसे हम थ्रेशिंग कहते हैं, वास्तव में थ्रेश शब्द, ठीक है, किसी चीज पर प्रहार करने के लिए। या हो सकता है कि उन्होंने जानवरों को इसके ऊपर से घुमाया हो या कुछ और किया हो क्योंकि इससे छिलके के बीच में मौजूद गिरी, अनाज के चारों ओर मौजूद सूखा छिलका टूट जाता है।

और फिर वे इसे एक स्थान पर ले जाते हैं, ठीक है, वे आम तौर पर यह सब एक ही स्थान पर करते हैं ताकि उन्हें इसे दूर तक नहीं ले जाना पड़े, बल्कि ऐसी जगह पर ले जाएं जहां अच्छी हवा

हो, स्थिर हवा हो, और उन्हें एक जगह मिल जाए इसे एक टोकरी में या कपड़े के टुकड़े में इकट्ठा करके हवा में उछाल दें। और फिर भूसी, हल्का बाहरी सामान, हवा में उड़ जाता है और भारी अनाज नीचे गिर जाता है। और जब वे काफी देर तक ऐसा करते हैं और थोड़ी देर के बाद, उनके पास केवल अनाज होगा, सारा भूसा खत्म हो जाएगा।

खैर, मुझे संदेह है कि वे कभी 100% तक पहुँच पाए होंगे, लेकिन आप इस विचार को जानते हैं। तो, यह कहता है कि राजा दुष्टों को परास्त करता है या दोषियों को परास्त करता है। दोनों श्लोक यही कहते हैं।

खैर, जब कोई अदालत खुलती है, तो न्यायाधीश को कम से कम दो लोगों का सामना करना पड़ता है, जिनमें से एक संभवतः दोषी है और दूसरा संभवतः निर्दोष है। शुरुआत में, जज को पता नहीं चलता कि कौन सा है। वह नहीं जानता कि सच्चाई कहां है।

यह निर्णय लेने के लिए भी उसके पास कोई वास्तविक आधार नहीं है, कम से कम पहली बार जब उसका इन लोगों से सामना होता है। तो, न्याय की प्रक्रिया क्या है? यह गेहूँ और भूसी को मिलाकर हवा में फेंकने की प्रक्रिया के समान है ताकि भूसी उड़ जाए। अब, रूपक काम करता है अगर हम जानते हैं कि विनोडिंग क्या है।

क्योंकि हम देख सकते हैं कि निर्दोष को दोषी से अलग करना गेहूँ को भूसी से अलग करने के समान है। और वास्तव में, यह रूपक पूरे धर्मशास्त्र में चलता है। मेरा मतलब है, आप इसे भविष्यवक्ताओं में पढ़ते हैं, आप इसे यीशु की शिक्षाओं में पढ़ते हैं।

यह तुरंत ही स्तोत्र, स्तोत्र 1 में है, है ना? दुष्ट भूसी के समान हैं, जिसे वायु उड़ा ले जाती है। यह हर जगह है। और यह वास्तव में एक अन्य रूपक से संबंधित है अर्थात् लोग पौधे हैं।

क्योंकि भूसी और गेहूँ या अनाज पौधे के भाग हैं। तो लोग पौधे हैं और राजा जो चीजें करता है, उनमें से एक, रूपक को बदलते हुए, वह पौधों के उत्पादों, गेहूँ और भूसी को फटकना है। और इसलिए वह न्याय, जो अंततः राजा का कार्य है, निर्दोषता और अपराध को अलग करने की प्रक्रिया है।

दरअसल, पवित्रशास्त्र में इसका सटीक उदाहरण वह है जो सुलैमान ने दो महिलाओं के साथ किया था, जिसके बारे में हमने अपने पहले व्याख्यान में बात की थी। तो, दो महिलाएं आती हैं, सोलोमन को नहीं पता कि बच्चा किस महिला का है, जीवित बच्चा किस महिला का है। उसके पास नहीं है, वह कभी नहीं है, जहां तक हम जानते हैं, वह उनमें से किसी से भी कभी नहीं मिला है।

इसके बारे में कुछ नहीं पता। इसलिए, वह अपनी तलवार ले आता है या तलवार मंगवाता है ताकि बच्चे को आधा काटा जा सके। और वह गेहूँ को भूसी से तुरंत ही अलग कर देता है।

खैर, नीतिवचन 20, 20, श्लोक छह के बारे में सबसे दिलचस्प बात यह है कि सुलैमान कहता है, एक बुद्धिमान राजा, मुझे क्षमा करें, एक राजा जो न्याय के सिंहासन पर बैठता है वह अपनी

आंखों से सभी दोषियों को परास्त कर देता है। ठीक है, मुझे लगता है, मुझे लगता है कि आप गेहूं के कुछ दाने अपनी पलकों पर रखकर उन्हें बहुत जोर से फड़फड़ाने में सक्षम हो सकते हैं। और यदि बहुत तेज़ हवा वाला दिन होता तो शायद भूसी उड़ जाती।

लेकिन मुझे नहीं लगता कि आप वास्तव में अपनी आँखों से किसी भी चीज़ को बहुत प्रभावी ढंग से समझ सकते हैं। शायद यह एक और रूपक है। क्या हो रहा है? वैसे आंखें भी शरीर का ही एक हिस्सा है जिसका इस्तेमाल हम देखने और समझने के लिए करते हैं।

एक अन्य मूलभूत रूपक दृष्टि है। अंतर के बारे में सोचो। इन दोनों कथनों के बीच अंतर के बारे में सोचें।

मान लीजिए, कोई आपको यह कहानी बता रहा है कि कार्यस्थल पर उनके साथ कैसा दुर्व्यवहार किया गया है। और आप कहते हैं, मैं समझ गया कि आपका क्या मतलब है। या तुम कहते हो, मैं तुम्हें सुनता हूँ।

फर्क तो है ना? देखने और सुनने के बीच एक अंतर है जो वास्तव में बहुत व्यापक है। अब, बाइबल देखने की तुलना में सुनने के बारे में अधिक बात करती है क्योंकि यह एक प्रशिक्षक के रूप में इसकी भूमिका से संबंधित है, न कि केवल किसी ऐसे व्यक्ति से जो प्रतिक्रिया प्राप्त कर रहा है। वहाँ भी एक अंतर है।

तो, यहाँ क्या है कि राजा को यह समझने की क्षमता दी जाती है कि क्या उचित है और क्या सही है। और जो सही है उसे परखने की क्षमता केवल कहने मात्र से, उसकी आँखों से पकड़ ली जाती है। या 1 राजा 3 में सुलैमान की प्रार्थना, जब उसने न्याय करने में सक्षम होने का उपहार मांगा, यानी समझने की क्षमता।

वह वास्तव में कहता है, अपने सेवक को सुनने वाला हृदय दो, सुनने वाला हृदय दो ताकि वह अपने लोगों का न्याय कर सके, अच्छे और बुरे के बीच या निर्दोषता और अपराध के बीच अंतर कर सके। वही छवि जो सुनने बनाम देखने की है। ठीक है, मैं इसे समझता हूँ।

लेकिन उन्होंने एक संवेदना, एक भावना, वहाँ हम जाते हैं, देखने का वही विचार लिया है और कहा है, सही ढंग से निर्णय करने का मतलब सही ढंग से देखना है। या सही ढंग से देखना किसी को सही ढंग से निर्णय लेने में सक्षम बनाता है, जो विवेक की हमारी चर्चा पर वापस जाता है जो हमने कुछ व्याख्यान पहले दिया था। वह है स्थिति को सटीक रूप से देखने और समझने की क्षमता।

और सुलैमान कहता है, इसलिए दोषी को परास्त करने की, दोषी को परास्त करने की यह क्षमता वास्तव में एक ऐसी क्षमता है जो उस तरह की अंतर्दृष्टि से आती है जिसे नीतिवचन की पुस्तक स्वयं अपने पाठकों को देने के लिए डिज़ाइन की गई है। यदि आप चाहें तो यह एक आत्म-प्रशंसा वाली कविता है। लेकिन यह स्पष्ट रूप से भी कहता है, और इस प्रकार का न्यायाधीश आपको बनना चाहिए।

अब, श्लोक 26 में दूसरे संदर्भ में, एक बुद्धिमान राजा दुष्टों को परास्त करता है और उनके ऊपर पहिया घुमाता है। थोड़ा अंतर है। इस बार राजा को बुद्धिमान कहा जाता है।

वह दुष्टों को परास्त करता है, हमें नहीं बताया जाता कि कैसे, वह अपनी आँखों से या किसी और चीज़ से नहीं बताता। और फिर, हम मानते हैं कि वह उन्हें हवा में ऊपर नहीं फेंकता है और देखता है कि कौन सा उड़ जाता है और कौन सा सीधे नीचे गिर जाता है। यह शायद हम्मूराबी के कुछ कानूनों के करीब होगा जहां किसी अपराध के आरोपी को नदी में फेंक दिया जाता है।

और यदि ईश्वर उन्हें चाहता है, नदी तो ईश्वर है, यदि ईश्वर उन्हें चाहता है, तो वह उन्हें ले लेता है। डायन होने के कुछ परीक्षणों की तरह। यदि तुम डूब गये तो तुम निर्दोष हो।

और यदि आप दोषी हैं, तो आप तैर सकते हैं। तो, आप वापस आएं और इसलिए आपको वास्तव में दंडित किया जा सकता है या शुद्ध किया जा सकता है। खैर, यहाँ बुद्धिमान राजा दुष्टों को परास्त करता है और उन पर पहिया घुमाता है।

खैर, कोई नहीं, फिर से, इसका मतलब क्या है इसके बारे में कुछ बहस है। क्या यह थ्रेसिंग व्हील है? कुछ अनुवाद थ्रेसिंग व्हील में डाले जाते हैं। हम नहीं जानते कि क्या वे वास्तव में पहिये से थ्रेसिंग करते थे।

हमारे पास जो चित्र, चित्र हैं, उनमें मिस्र के कुछ चित्र हैं, मिस्र की कुछ कब्रों के चित्र हैं, जिनमें मवेशियों को एक घेरे में बंधे हुए घूमते हुए दिखाया गया है। और यह सिर्फ उनके खुरों का वजन है। टर्नस्टाइल गायों को जगह पर रखने के अलावा कुछ नहीं कर रहा है।

तो, वे एक घेरे में घूम रहे हैं और केवल उनके पैरों का वजन उन्हें कुचल रहा है, अनाज से भूसी को अलग कर रहा है। और यह, और वह हो सकता है जिसके बारे में हम यहां बात कर रहे हैं। तो, यह है कि पहिया शब्द वास्तव में बीच के पहिये का एक रूप है।

तो, वह पहिया चलाता है, जिसका अर्थ है कि वह उन गायों को चलाता है जो पहिया घुमा रही हैं या जिनके ऊपर पहिया द्वारा नियंत्रित किया जाता है या बैलों या जो कुछ भी वे हो सकते हैं। या यह हो सकता है कि वह वास्तव में किसी प्रकार का पहिया चला रहा हो। हम जानते हैं कि लौह युग के जैतून प्रेस से, उदाहरण के लिए, एक जैतून प्रेस में, वे एक सपाट, अपेक्षाकृत सपाट पत्थर में एक नाली, एक गोल नाली बनाते थे और जाहिरा तौर पर उस नाली को जैतून से भर देते थे और शीर्ष पर चारों ओर एक और पत्थर रोल करते थे। .

तो, यह खांचे के चारों ओर घूमेगा और फिर जैतून का तेल तली में एक छेद के माध्यम से निकल जाएगा। शायद उसका यही मतलब है। तो, वह वास्तव में अपने रूपक का मिश्रण कर रहा है।

वह एक के साथ जैतून को कुचलने के बारे में बात कर रहा है और दूसरे के साथ अनाज को तोड़ने के बारे में बात कर रहा है और न्याय के बारे में बात कर रहा है, न्याय के बारे में बात करने के लिए पूरी चीज़ का उपयोग कर रहा है। शायद इसका यही मतलब है। लेकिन आप देखिए,

इसके मूल में यह विचार है कि न्याय निहित है या न्याय जीतना है, जो वास्तव में यह कहने का एक तरीका है कि न्याय में जो सही है उसे जो गलत है उसे अलग करना शामिल है।

न्याय नहीं है, और ऐसे कई छंद हैं जो इस पर चर्चा करते हैं, न्याय यह सुनिश्चित करने का मामला नहीं है कि गरीबों को हमेशा अपना रास्ता मिले या अमीरों को हमेशा अपना रास्ता मिले। न्याय राजा के सर्वोत्तम हित का ध्यान रखने या किसी एक व्यक्ति के सर्वोत्तम हित का ध्यान रखने का विषय नहीं है। यह प्रयास है, ठीक है, क्लासिक्स की तरह, आप जानते हैं, जैसा कि यूनानियों और रोमनों ने किया होगा, न्याय को अंधा बनाने का प्रयास है, दोनों पक्षों के सबूतों को तराजू में रख दिया जाए और न्याय विकृत न हो तराजू क्योंकि वह देख नहीं सकती।

वे जहां भी जाएं, वह उन्हें पकड़कर वहीं खड़ी रहती है। इससे तय होता है कि कौन सही है और कौन गलत। और नीतिवचन की पुस्तक में वास्तव में यही चित्र है।

यह हमें यह भी दिखाता है, सुझाव देता है, दो छंदों को देखने से पता चलता है, एक और चीज जो बहुत उपयोगी होती है जब हम नीतिवचन में अलग-अलग छंदों के बारे में सोच रहे होते हैं और वह यह है कि चूंकि प्रत्येक पर कई छंद होते हैं, या कई पर, हर विषय में एक नहीं होता है बहुत सारे छंद हैं जो इसका उल्लेख करते हैं, लेकिन काफी संख्या में हैं। ऐसे कुछ सौ श्लोक हो सकते हैं जो हमारे शब्दों और मुँह के उपयोग के तरीके के बारे में बात करते हैं। और कुछ छंद ऐसे हैं जो विनोइंग जैसी चीजों के बारे में बात करते हैं।

दरअसल, ये केवल दो ही हो सकते हैं। लेकिन नीतिवचन की पुस्तक को पढ़ने में, जैसे आप इसे पढ़ते हैं, मैं दृढ़ता से आपको एक नोटबुक रखने या आज कंप्यूटर का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ और किसी विशेष विषय से संबंधित सभी छंदों पर नज़र रखता हूँ और शायद पुस्तक को पढ़ता हूँ, मैं पता नहीं, कुछ सौ बार या, आप जानते हैं, 10 या 20 बार और हर बार एक अलग विषय की तलाश करें। और इस तरह आप विषयों का अपना सामंजस्य बना लेंगे।

और आप पाएंगे कि कुछ श्लोक संदर्भित हैं, दो या तीन स्थानों पर फिट हो सकते हैं। ये दोनों श्लोक रिश्तेदारी के अंतर्गत फिट हो सकते हैं। वे न्याय के दायरे में आ सकते थे।

मुझे लगता है कि वे विनोइंग के तहत फिट हो सकते हैं, हालांकि यह वास्तव में सिर्फ एक छवि है। बात यह नहीं है। वे खेती के बारे में नहीं हैं।

वे खेती की दुनिया मानते हैं। और इसलिए कि जब आप अगली कविता पढ़ें जिसका संबंध न्याय से है, तो हम उस कविता को शून्य में नहीं पढ़ रहे हैं। तो, मेरा मतलब है, मुझे लगता है कि मैं जो कहना चाह रहा हूँ वह यह है कि जब हम नीतिवचन 10 पढ़ते हैं, अध्याय 10 से शुरू करते हैं, तो यह देखना बहुत आकर्षक होता है कि उनका कोई संदर्भ नहीं है और वे केवल स्वतंत्र रूप से तैरने वाले छोटे अमीबा के रूप में हैं। यह लौकिक सूप।

लेकिन इसके बजाय, हम इसके बारे में सोच सकते हैं, शायद हम यह सोच सकते हैं कि एक व्यक्तिगत कहावत का संदर्भ अन्य सभी कहावतें हैं जो उसी विषय से संबंधित हैं। इसलिए जब

हम इस कहावत को पढ़ेंगे तो यह बहुत स्पष्ट हो सकती है। यह न्याय के बारे में एक बहुत स्पष्ट कहावत हो सकती है।

कुछ अन्य भी हो सकते हैं जो इतने स्पष्ट न हों। या हम पा सकते हैं कि 15 आयतें हैं जो न्याय से संबंधित हैं, वास्तव में लगभग 45 आयतें हैं जो न्याय से संबंधित हैं। और उनमें से कुछ जज के स्वभाव के बारे में बात करते हैं।

उनमें से कुछ लोग रिश्त लेने की बात करते हैं. उनमें से कुछ गवाह के चरित्र के बारे में बात करते हैं। उनमें से कुछ वास्तव में न्याय की आवश्यकता के बारे में बात करते हैं, वास्तव में यह कैसे होता है इसके बारे में बात किए बिना।

तो, हम पाते हैं कि वहाँ उप-विषयों का एक समूह है, जिसमें बड़ा विषय न्याय है। और अन्य छंदों का एक पूरा समूह है जो उस विषय से संबंधित है। हम देख सकते हैं कि कैसे वे सभी छंद एक ही विचार को प्रस्तुत करते हैं और नीतिवचन की पुस्तक न्याय के बारे में क्या कहती है, इसकी पूरी तस्वीर देने के लिए एक-दूसरे से मेल खाते हैं।

यह उस बात पर आधारित है जो मैंने पहले कहा था कि किसी भी व्यक्तिगत कविता को निरपेक्ष नहीं किया जाए। तो जो व्यक्ति केवल यह कहता है, छलांग लगाने से पहले देखो, वह कभी कुछ नहीं करेगा क्योंकि वह अपना पूरा जीवन देखने में बिता देगा। उसे समझने की जरूरत है, नहीं, जो झिझकता है वह खो जाता है।

या कोई अन्य कहावत जो कहती है, कुछ शब्द ऐसे हैं जो काम करते हैं और कुछ ऐसे हैं जो काम नहीं करते। यह एक पुरानी लैटिन कहावत है, जिसका लैटिन मुझे याद नहीं है। लेकिन मूलतः, कुछ लोग बातें कहते हैं और बातें होती हैं।

दूसरे लोग सिर्फ बातें करते हैं, कभी कुछ नहीं करते। ठीक है, यहां हमें पता चलता है कि कुछ छंद हैं, न्याय पर छंदों को देखते हुए, हम पाते हैं कि ये दो छंद सर्वोच्च न्यायालय के रूप में राजा की आवश्यकता पर जोर देते हैं, एक प्रकार की अंतिम अपील की अदालत, अपनी समझ का उपयोग करने और निर्णय लेने के लिए कि कहां सही और गलत झूठ. और यदि आप शायद सोच रहे हैं, ठीक है, मैं नेता या न्यायाधीश या सीनेटर या राष्ट्रपति या राजा या कुछ और नहीं बनने जा रहा हूँ, ठीक है, यह सच हो सकता है।

हममें से अधिकांश शायद नहीं हैं। वास्तव में, अधिकांश इस्राएली भी नहीं थे। लेकिन हर व्यक्ति निर्णय लेता है.

एक से अधिक बच्चों या यहाँ तक कि एक बच्चे के प्रत्येक माता-पिता को कभी-कभी यह समझ का सामना करना पड़ता है कि क्या यह सच है या नहीं? गलती किसकी है? प्राधिकार की स्थिति में प्रत्येक व्यक्ति को निर्णय लेना होता है। यह ज़िम्मेदारी के अर्थ का एक हिस्सा है। और इसलिए, यह कहावत लागू होती है कि तुम मुझसे कहते हो, मुझसे सावधान रहो।

क्योंकि आप जो अलग कर रहे हैं वह गेहूँ और भूसी है, और एक बार जब भूसी उड़ जाती है, तो वह खत्म हो जाती है। इसलिए निश्चित रहें कि यह भूसी है जो उड़ जाती है और गेहूँ नीचे गिर जाता है। क्योंकि आपके द्वारा लिए जा रहे ये निर्णय उन लोगों के जीवन को प्रभावित करेंगे जिनके साथ आप काम कर रहे हैं।

संदर्भ का दूसरा पहलू, संक्षेप में उस पर लौटने के लिए, यह है कि जब आप अपना सामयिक सूचकांक बना रहे हों, तो याद रखें कि एक ही विचार के बारे में बात करने के लिए एक ही शब्द होना जरूरी नहीं है। आप वास्तव में जो खोज रहे हैं वह कहावतें हैं जो किसी अवधारणा के बारे में बात करती हैं, जैसे न्याय या विवाह या भाषण या कुछ और या पालन-पोषण। और इसलिए, अनुशासन के बारे में बात करने के लिए उनके अंदर अनुशासन शब्द होना जरूरी नहीं है।

नेतृत्व के बारे में बात करने के लिए उनमें राजा शब्द का होना जरूरी नहीं है। शादी के बारे में बात करने के लिए उनके पास पत्नी शब्द होना जरूरी नहीं है। तो, आप शायद बहुत जल्दी देख सकते हैं कि इस तरह से एक सूचकांक संकलित करने की शुरुआत भी यह सोचना शुरू करना है कि कहावतों का क्या मतलब है।

यह सिर्फ एक स्वचालित चीज़ नहीं है। मेरा मतलब है, आप इसे इस तरह से कर सकते हैं। आप बस अपने आप से पूछ सकते हैं कि क्या आपके पास एक कंप्यूटर प्रोग्राम है, बस कहें, उनमें। शब्द के साथ सभी कहावतें देखें, और मैं उन्हें एक स्थान पर रखना चाहता हूँ।

उनका संबंध मैं से है। खैर, आपको यह समझने की जरूरत है कि यह देखने का एक रूपक है। और फिर सवाल यह उठता है कि आप क्या देख रहे हैं? क्या सभी कहावतें पैसा शब्द के साथ हैं? लेकिन क्या होगा अगर किसी कहावत में सोना शब्द हो लेकिन पैसा नहीं? या धन लेकिन पैसा नहीं? या कुछ और? तो, आपको इसे पढ़ने की जरूरत है। यह किसी लाइब्रेरी में इलेक्ट्रॉनिक कार्ड कैटलॉग का उपयोग करने के बीच के अंतर जैसा है, जो आपको बिल्कुल वही तक ले जाएगा जो आप चाहते हैं और अलमारियों को ब्राउज़ करने में सक्षम होना जहां आप इसके बगल में किताबें देख सकते हैं, और आप कहते हैं, ओह, मैं कभी नहीं जानता था कि वह पुस्तक यहीं है।

यह काफी दिलचस्प लग रहा है। और तब आपको पता चलता है कि यह वास्तव में वह पुस्तक है जिसे आप चाहते थे, लेकिन आप इसे कंप्यूटर का उपयोग करके नहीं पा सकते थे क्योंकि कंप्यूटर वास्तव में नहीं जानता था कि आपकी रुचि किसमें थी। खैर, कहावतों में भी ऐसा ही है।

लेकिन संदर्भ का एक और पहलू है जो थोड़ा अजीब लग सकता है, और वह है आप जो कविता पढ़ रहे हैं उसके आसपास की कहावतें। जब हम पढ़ते हैं, तो हम पाते हैं कि ऐसे कई मामले हैं जहां छंद ठीक बगल में, या शायद दो छंद दूर, या तीन छंद दूर, या एक पंक्ति में तीन या चार छंद, सभी एक ही या संबंधित विषय से संबंधित हैं, यहां तक कि हालाँकि हो सकता है कि वे ज्यादा पसंद न आएँ। तो, हम अध्याय 16 की शुरुआत में कुछ इस तरह पढ़ते हैं।

मन की युक्तियाँ मनुष्य की ओर से होती हैं, परन्तु जीभ का उत्तर यहोवा की ओर से होता है। मनुष्य के सब चालचलन उसकी दृष्टि में शुद्ध हैं, परन्तु यहोवा मन और विचारों को तोलता है। अपने कार्यों को यहोवा को सौंप दो, जिससे तुम्हारी योजनाएँ स्थापित हो जाएँ।

और फिर यह कहता है, यहोवा ने सब कुछ अपने ही प्रयोजन के लिये बनाया है, यहां तक कि दुष्टों को भी विपत्ति के दिन के लिये बनाया है। एक सेकंड रुको। क्या वह तीसरा, प्रतीक्षा करता है, लेकिन उन सभी छंदों का मतलब क्या है? मैं जानता हूँ कि मैं उनसे बहुत जल्दी गुजर गया।

आप उन्हें स्वयं देख सकते हैं। और यह श्लोक पाँच तक जाता है। जो कोई मन में घमण्डी और यहोवा के प्रति घृणित है, वह निश्चय निर्दोष नहीं ठहरेगा।

एक सेकंड रुको। श्लोक छह, प्रेम-कृपा से। हम अध्याय 16 पढ़ना शुरू करते हैं और सोचते हैं कि प्रत्येक श्लोक का क्या अर्थ है।

और अचानक हमें एहसास होता है, आप जानते हैं, लगभग यह पूरा अध्याय अधिकार से संबंधित है। कभी-कभी यह प्रभु का अधिकार होता है। कभी-कभी यह राजा का अधिकार होता है।

कभी-कभी यह हमारी ज़िम्मेदारी है, जो वास्तव में हमारे अपने जीवन के लिए हमारा अधिकार है। और इसलिए, हम देखते हैं कि यहां छंदों का एक संग्रह है जो सभी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, कभी-कभी बहुत सूक्ष्मता से, ताकि कोई निर्णय के बारे में बात कर सके, लेकिन निर्णय करने का अधिकार किसे है? आपके पास न्याय करने का अधिकार होना चाहिए। हर किसी को केवल निर्णय लेने का अधिकार नहीं है।

इसलिए, जब हम नीतिवचन में एक पद पढ़ते हैं, और मुझे लगता है कि मैंने वही बात कही थी जब हमने भजन संहिता की पुस्तक के बारे में बात की थी, तो हम केवल इसके द्वारा एक भजन नहीं पढ़ सकते हैं। हमें इसके पहले स्तोत्र और इसके बाद स्तोत्र पढ़ना होगा। क्योंकि कभी-कभी, मुझे लगता है कि वास्तव में अधिकांश समय, इसका एक अच्छा कारण है कि वे तीन भजन एक पंक्ति में आते हैं, जिस क्रम में वे आते हैं और वे एक-दूसरे के बगल में होते हैं।

और नीतिवचन की किताब में भी यही बात प्रायः सत्य है, बहुत बार सत्य है। इसलिए, हम संदर्भ के लिए, इसके चारों ओर छंदों को देखते हैं। और कभी-कभी हम कहेंगे, मुझे कोई संबंध नहीं दिखता।

और कभी-कभी कोई संबंध नहीं भी हो सकता है। कभी-कभी ऐसा हो सकता है कि संबंध वही है जो 3,000 साल पहले पारदर्शी रहा होगा, लेकिन हमारी संस्कृतियों और चीजों को समझने के हमारे तरीके में अंतर के कारण, या स्पष्ट रूप से, यहां तक कि हमारे अनुवादों में भी, संबंध स्पष्ट नहीं है। सब हमारे लिए। लेकिन कभी-कभी यह बहुत स्पष्ट होगा।

और यह हमेशा विचार करने और विचार करने लायक है। इसलिए यह मान लेना बेहतर है कि कोई संबंध है, जब तक कि आप यह निष्कर्ष निकाल लें कि कोई संबंध नहीं है, बजाय इसके

कि यह कहें, ठीक है, यह कहावत अपने आप में चरितार्थ होती है। मैं इसके आस-पास की बाकी सभी चीजों को नजरअंदाज कर सकता हूँ।

इसलिए, हम संदर्भ के बारे में समझ के हिस्से के रूप में, समझने की हमारी कोशिश के हिस्से के रूप में बात करते हैं। हम केवल समानता या कल्पना को नहीं देखते हैं या कहानी को खोलते नहीं हैं, बल्कि हम इसके आसपास के अन्य छंदों को भी देखते हैं कि क्या वे हमें कोई मदद देते हैं। और हम इसी विषय पर अन्य सभी छंदों को देखते हैं कि वे हमारी कैसे मदद कर सकते हैं।

मैं बता दूँ कि मैं विशेष रूप से उस कहावत पर गौर करना चाहता हूँ जो मैंने इस बातचीत के अंत में कही थी। लेकिन इससे पहले कि मैं ऐसा करूँ, एक और सवाल है। यह सारी बातचीत संभवतः बहुत ही धार्मिक-वैज्ञानिक लग रही है।

जैसे कि हम वास्तव में सिर्फ धर्मनिरपेक्ष ज्ञान पढ़ रहे हैं, और हमें बस इसे सही प्रक्रिया, व्याख्यात्मक प्रक्रिया के माध्यम से चलाना है, और हम सही उत्तर के साथ सामने आएं। जैसा कि हमने कहा, जैसा कि अध्याय 1, श्लोक 7 में कहा गया है, और जैसा कि अध्याय 9 के अंत में दोहराया गया है, हमें भगवान के डर से ऐसा करना होगा, अन्यथा हम नीतिवचन के अर्थ की कुछ बौद्धिक समझ के साथ आ सकते हैं, लेकिन वास्तव में इसका उपयोग करने और इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाने के लिए उपयुक्त बनाने की हमारी क्षमता बहुत गंभीर रूप से बाधित होगी, अगर इसे समाप्त नहीं किया जाएगा, जब तक कि हमारे पास आज्ञाकारिता और समर्पण और वास्तव में विश्वास का रवैया नहीं होगा। लेकिन एक और सवाल है, मुझे लगता है, जो नीतिवचन पढ़ने से संबंधित है, और वह यह है कि यदि कहावतें पवित्रशास्त्र का हिस्सा हैं, जो कि वे हैं, तो पवित्रशास्त्र की भूमिका में, पवित्रशास्त्र के कार्य में नीतिवचन की पुस्तक की क्या भूमिका है? अर्थात्, यदि पवित्रशास्त्र ईश्वर का रहस्योद्घाटन है, तो समग्र रूप से नीतिवचन की पुस्तक और एक व्यक्तिगत नीतिवचन की रहस्योद्घाटन भूमिका क्या है? कभी-कभी यह बिल्कुल स्पष्ट होता है।

इसलिए, बेईमान बातों और बेईमान मापों से, प्रभु उन दोनों से घृणा करते हैं। ठीक है, तो भगवान को ईमानदारी पसंद है। मेरा मतलब है, हमें यह बताने के लिए नीतिवचन की पुस्तक की आवश्यकता नहीं है, हमें यह बताने के लिए उस कहावत की भी आवश्यकता नहीं है।

हमारे पास कई अन्य स्थान हैं जहां हमें वही चीज़ मिलती है, लेकिन वहां इसे बहुत यादगार तरीके से कहा जाता है। और कुछ कहावतें बहुत स्पष्ट हैं कि वे किस प्रकार ईश्वर से संबंधित हैं। तो, हमारे पास श्लोक हैं जो बात करते हैं, अमीर और गरीब एक साथ मिलते हैं, भगवान उन दोनों का निर्माता है।

खैर, कहावत का पूरा कार्य हमारे निर्माता के रूप में, सभी मनुष्यों के निर्माता के रूप में, जीवन में उनके स्थान की परवाह किए बिना, भगवान की भूमिका पर निर्भर करता है। तो, हमारे पास छंद हैं जिनके बारे में हम कह सकते हैं कि वे स्पष्ट रूप से धर्मशास्त्रीय हैं। राजा का हाथ जल की नाली के समान है, जल की नाली के समान है, और राजा का हृदय जल की नाली के समान है।

भगवान के हाथ में, वह जहाँ चाहे उसे घुमा देता है। तो, एक सिंचाई खाई की तरह, जो वहाँ इस्तेमाल की जा रही छवि है, किसान पानी को जहाँ चाहे वहाँ ले जा सकता है, ठीक है, भगवान भी राजा के दिल के साथ वही काम कर सकता है। वह बस राजा को पलट सकता है, इसलिए राजा, जिसे आप जानते हैं, ऊपर उठाता है, वहाँ एक छवि है कि लोग पानी हैं, बहुत नहीं, और इज़राइल में बहुत अधिक बर्फ नहीं है, इसलिए, प्राकृतिक बर्फ, यानी।

तो, हम तरल पानी के बारे में बात कर रहे हैं। लोग बस परिवर्तनशील होते हैं, आप उन्हें जहाँ चाहें वहाँ ले जा सकते हैं। खैर, प्रभु राजा को इसी प्रकार देखता है।

और वहाँ एक और छवि है, जैसे, उसके नीचे एक रूपक है, जो यह है कि भगवान एक किसान हैं। वह एक किसान है जो सिंचाई करता है, खाई खोदता है और पानी को जहाँ चाहता है वहाँ ले जाता है। खैर, यह बिल्कुल स्पष्ट है।

मुझे लगता है कि यह एक श्लोक है जो कहता है कि भगवान संप्रभु है, वह नियंत्रित करता है, और कोई भी इंसान इसके बारे में बहुत कुछ नहीं कर सकता है। लेकिन अन्य छंद भी हैं जो उतने स्पष्ट नहीं हैं। और इसके लिए, मैं समय के कारण, उस श्लोक पर वापस जाना चाहता हूँ जिसके बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं, और वह अध्याय 10, श्लोक 1 है। और यह प्रश्न पूछें, क्या वह श्लोक कहता है, एक बुद्धिमान पुत्र पिता को प्रसन्न करता है, लेकिन एक मूर्ख बेटा अपनी माँ का दुःख है, क्या यह वास्तव में हमारी समझ में कुछ जोड़ता है कि भगवान कौन है? यदि हम उस वेब की तस्वीर के बारे में सोचते हैं जो मैंने सुझाया था, और वह हम हैं, तो मनुष्य आपस में जुड़े हुए हैं, ताकि एक के साथ जो होता है वह दूसरों को प्रभावित करता है, और वे जितने करीब होते हैं, उतनी ही गहराई से वे प्रभावित होते हैं।

मुझे लगता है कि इससे कुछ और ही पता चलता है। और मैं कहना चाहता हूँ, ठीक सामने, मुझे नहीं लगता कि यह सिर्फ कहावत से निकला है, ठीक है? यह उस प्रकार का निष्कर्ष है जो संभवतः हम जितना व्यापक रूप से पढ़ सकते हैं, पढ़ने से आता है, न कि जितना संकीर्ण रूप से हम इससे दूर हो सकते हैं। लेकिन यहाँ एक विचार है।

क्या होगा यदि कविता रिश्तों के महत्व के बारे में बात कर रही है, और एक बुद्धिमान और मूर्ख बेटे की इस छवि का उपयोग कर रही है, और उपस्थिति पर प्रभाव, हमें रुकने और सोचने के लिए मजबूर कर रही है कि हमारे कार्य हमारे आस-पास के लोगों को कैसे प्रभावित करते हैं, खासकर हमारे निकट के लोगों को। हम कह सकते हैं, ठीक है, ईश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है, और हमारे कार्य उसे दुःखी करते हैं या उसे प्रसन्न करते हैं। ठीक है, धर्मग्रंथ में ऐसे स्थान हैं जो ऐसा सुझाव देते हैं।

मुझे यकीन नहीं है कि यह श्लोक वास्तव में इसी बारे में बात कर रहा है। शायद यह हमें हमारे अस्तित्व की प्रकृति के बारे में सोचने का एक नया तरीका देने पर केंद्रित है। आप जानते हैं, हम 2 तीमुथियुस को उद्धृत करते हैं कि सभी धर्मग्रंथ ईश्वर द्वारा रचित हैं और इन उद्देश्यों के लिए दिए गए हैं, आप जानते हैं, हमें सुधारने और हमें फटकारने, हमें धार्मिकता में प्रशिक्षित करने आदि के लिए।

लेकिन शायद हम इसके बारे में सिर्फ नैतिक सुधार के संदर्भ में ही नहीं सोच सकते। शायद पवित्रशास्त्र के उद्देश्य का एक हिस्सा हमारे सोचने के तरीके और वास्तविकता को समझने के तरीके को सही करना है। तो फिर, नीतिवचन 10:1 जैसी एक आयत हमें यह बता रही है कि हममें से किसी का भी अपने आप में अस्तित्व नहीं है, कि अन्य लोगों के प्रति हमारी जिम्मेदारियाँ हैं, कि हम उन जिम्मेदारियों को समझ सकते हैं या सराहना कर सकते हैं या चाहते हैं या नहीं, या क्या हम उस रिश्ते की सराहना करते हैं जो हमें वह जिम्मेदारी देता है, यानी, इस मामले में, क्या हम इस तथ्य की सराहना करते हैं कि मैं एक निश्चित पिता और एक निश्चित माँ का बेटा हूँ, यह मायने नहीं रखता है।

इस श्लोक और इसके निहितार्थों के माध्यम से सोचने में, न केवल हमारे व्यवहार के लिए, बल्कि हमारे सोचने के तरीके, हमारे सोचने के तरीके के लिए, भगवान हमें जो दिखा रहे हैं वह यह है कि ब्रह्मांड वास्तव में एक संबंधपरक ब्रह्मांड है। और फिर, बदले में, हमें यह सुझाव देना चाहिए कि हम सोचते हैं, ठीक है, यदि ब्रह्मांड भगवान द्वारा बनाया गया है, और नीतिवचन 8 में हमारे पास वह महान कथन है, जो न केवल भगवान द्वारा ब्रह्मांड के निर्माण के बारे में बात करता है, बल्कि बुद्धि से भी, तो जो रचना अपने रचयिता का चरित्र धारण करती है वह स्वयं हमें दिखा रही है कि ईश्वर संबंधपरक है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह श्लोक बताता है कि ईश्वर त्रिमूर्ति है।

मैं इसे एक कहावत में बदलने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। मैं इसे इसलिए उठा रहा हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि हम नीतिवचनों के बारे में उनके व्यवहार संबंधी मुद्दों की तुलना में कहीं अधिक व्यापक रूप से सोच सकते हैं। और वह कहावत एक संकुचित कहानी है।

नहीं, यह कोई संकुचित उपन्यास भी नहीं है। यह एक संपीड़ित महाकाव्य की तरह है, जैसे लॉर्ड ऑफ द रिंग्स में हॉबिट और सिल्मारिलियन सभी आठ शब्दों में सिमटे हुए हैं। यह एक अन्य रूपक का उपयोग करने जैसा है, एक दरवाजे की तरह जो हमें एक दुनिया में कदम रखने के लिए आमंत्रित करता है, एक ऐसी दुनिया जिसमें हम एक निश्चित तरीके से रहेंगे क्योंकि हम एक नए तरीके से समझते हैं और देखते हैं।

मुझे आशा है कि आपको नीतिवचन की पुस्तक पढ़ने, उनका अध्ययन करने और उनसे आशीर्वाद पाने में उतना ही आनंद आएगा जितना मुझे आता है। सुनने के लिए धन्यवाद।

नीतिवचन की पुस्तक पर डॉ. फ्रेड पुटनम का यह चौथा और अंतिम व्याख्यान था।